नाड़ीप्रकाश with ~~टीका~~ ~~comento~~
Commentary in old Hindi by
माथुर दत्तराम – Edited and
~~published~~ by लाला देवीदास खत्री and
Published ~~by~~ at काशीसमान Press by
लाला हरप्रसाद – ~~मथुरा~~ Lithoprint edn.,
brittle condition and neatly repaired.
मथुरा, 1884 AD.

(15)

Bill No. 3/07-08

2008-0319

154

(1354)

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नाड़ीप्रकाश

माथुरदत्त रामप्रणीतम्॰

जिस्में नाना प्रकार के रोगों॰
की चित्र विचित्र नाड़ी की॰
परीक्षा
परिणीत है ॥

हस्ब फरमायश लाला देवी
दास खत्री ताजर कुतब शहर
मथुरा
के काशी समानन्नाम यंत्रालय
में लाला हरप्रसाद के प्रबंध से
छपी॰ मोल्य फ़ी जिल्द ⟌ आने

Indira Gandhi National

1354

KALANIDHI
Rare Book Collection
ACC No. R-319
IGNCA Date 25-3-08

SAN
615.536
MAT

DATA ENTERED
Date 24/06/08
Indira Gandhi National
Centre for the Arts

श्री

श्रीगणेशायनमः॥

मू॰ धन्वंतरिंवैद्यराजंनत्वाज्ञानप्रदंगु
रुं नाडीप्रकाशग्रन्थस्य प्रकाशः
क्रियतेधुना ॥१॥

टी॰ ग्रन्थकेआदिमेंऔरग्रंथकेअंतमेंमंगलाचरनक
रकरतेहैं इसीसेनमस्कारात्मकमंगलग्रंथकर्ताकरताहै ध
न्वंतरिमिति धन्वंतरिवैद्योंकेराजाऔरज्ञानकेदेनेवालेगुरुको
नमस्कारकरकेमैंनाडीप्रकाशग्रन्थको प्रकाशकरताहूं१

मू॰ अन्यग्रंथान्समालोच्यवैद्यानांवो
धहेतवे नाडीप्रकाशग्रन्थोऽयंदे
वीदासेनकथ्यते ॥२॥

टी॰ औरजोभावप्रकाशादिग्रंथहै तिनकामतदेखि
कैवैद्योंकेवोधकेहेतुयेनाडीप्रकाशग्रंथदेवीदासकहतेहैं २

मू॰ नाडीज्ञानंविनायोवैचिकित्सां
कुरुतेभिषक् सोनैवलभतेलक्ष्मीं
नचधर्मंनवैयशः ॥३॥

टी॰ नाडीकेजानेविनाजोवैद्यदवाकरताहै सोवैद्य
धनऔरधर्मऔरयसकोनहींप्राप्तहोताहै ॥३॥

मू॰ दोषकोपेघनेऽप्येचपूर्व्वंनाडी
परीक्षयेत अंतेचादौस्पिनिरुज
स्याविज्ञेयाभिषजास्फुटम् ॥४॥

टी· वहुतऔर यादे दोषविगड़नेमेंपहिलेनाड़ीकी परीक्षाकरैतमनाड़ीकोअंतआदिऔरचकारसेमध्यमें अर्थात् आदिमध्यअंतमें जिसस्थानपरचलैतसीरोगकोजानै ॥४॥

मू· यथावीणागतातंत्रीसर्वान्रागान्
प्रकाशते तथाहस्तगतानाड़ीस
र्वान्रोगान्प्रभाषते ॥५॥

टी· जैसेवीणाकातारसवरागोंकोवतातीहै तैसेंहाथकीनाड़ीसवरोगोंकोवतातीहै ॥५॥

मू· नाड्यामूत्रस्यजिह्वायाकुरुपूर्वंपरी
क्षां पश्चाद्भेषजंदेयंवैद्यसद्य
सुखावहम् ॥६॥

टी· पहिलेहैवैद्यसवरोगोंमेंनाड़ीजीभऔरमूत्रकी परीक्षाकरपीछेरोगकोजल्दीसुखकीदेनेवालीदवादेवै॥६

मू· नाड्यामूत्रस्यजिह्वायालक्षणंयो
नविंदते मारयत्याशुवैजंतून्स
वैद्योनयशोलभेत् ॥७॥

टी· नाड़ीकीऔरमूत्रकीऔरजीभकीजोवैद्यपरीक्षा नहींजानैहैं वहवैद्यमनुष्योंकोजल्दीमारैहै औरयशकोनहींपावैहै ॥७॥

मू· स्थिरचित्तःप्रसन्नात्मामनसाचवि
शारदः स्पृशेदंगुलिभिर्नाड़ीजा·

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मीयाद्दक्षिणेकरे ॥ ८ ॥

टी· स्थिरचित्त और प्रसन्नशरीर मनमें चतुर होयसो सावैद्य दहिने हाथको अंगुलीनसे स्पर्श करिके नाड़ीको जाने

मू· ईषद्विनामितकरं विततांगुलीयं
बाहुं प्रसार्य रहितं परिपीडनेन·
अंगुष्टमूलपरिपश्चिमभागमध्ये
नाड़ीं प्रभातसमये प्रथमं परीक्षेत् ९

टी· अब नाड़ी स्पर्शकरनेकी विधि कहतेहैं वैद्य जोहै सो रोगी पुरुषके दाहने हाथको सीधी अंगुली करके और कछुक नवायके और इस तरह से न पकड़े जिससे रोगीको दुखहोय और अंगूठाके नीचे नाड़ी प्रातःकालके समय· प्रथम देखें ॥ ९ ॥

मू· वारत्रयं परीक्षेत धृत्वा धृत्वा विमुच्य
च विमृश्य बहुधा बुध्या रोगव्यक्तिं·
विनिर्दिशेत् ॥ १० ॥

टी· वैद्य रोगीकी नाड़ीपर तीनवार अंगुली धरके उठाय लेजब अच्छी तरहसे बुद्धिमें विचारले तब रोगको कहै ॥ १० ॥

मू· सद्यस्नातस्य भुक्तस्य तथा स्नेहाव
गाहिनः क्षुत्तृषार्त्तस्य सुप्तस्य सम्य
क नाड़ी न बुध्यते ॥ ११ ॥

टी जिस रोगीने तत्काल स्नान किया होवा भोजन किये होवा तेल लगाया हो अथवा भूखा वा प्यासा हो अथवा सोया

हाहो उसकी नाड़ी अच्छी रीतिसे देखने में नहीं आती इसी
सेदूतने मनुष्यों की नाड़ी न देखे ११ रोसे वैद्य को नाड़ी न दिखावे

मू. पीतमद्यश्चंचलात्मामलमूत्रादि
वेगयुक् नाड़ीज्ञाने समर्थः स्या
ल्लोभाक्रांतश्च कामुकाः ॥१२॥

टी. जिसवैद्यने दारू पी हो और जिसका चंचल मन हो
और जिसको मलमूत्र त्यागने की इच्छा हो और लोभी को और कामी
हो तिसको अपनी नाड़ी नदिखावै इनवैद्यो को यथार्थ ज्ञान नहीं होवै

मू. त्यक्तमूत्रपुरीषस्य सुखासीनस्य रोगि
णः अंतर्जानुकरस्यापि नाड़ी सम्य
क प्रबुध्यते ॥१३॥

टी. जो रोगी मलमूत्र त्याग कर चुका हो सुखसे बैठा होय
और दोनों जानके बीच में हाथ किये होय तिस रोगी की ना
ड़ी वैद्य देखै तो भले प्रकार मालूम हो ॥१३॥

मू. स्त्रीणांभिषक्वामहस्ते वामेपादे
च यत्नतः शास्त्रेण संप्रदायेन
तथा स्वानुभवेनच परीक्षेदूत्तव
च्चाः साबभ्यासदेव जायते ॥१४॥

टी. वैद्य स्त्री की नाड़ी बांये हाथकी और बाम पैर की देखै
और पुरुष के दहने हाथ की और दहने पैर की नाड़ी शास्त्र के
जोर से और अपने अनुभवसे और पुराने वैद्यों की संप्रदा में दे
खें जैसे जो है री अभ्यास से और आजमायस सें रत्न की परीक्षा

करताहै तैसेवैद्यनाड़ीकीपरीक्षाकरै ॥१४॥

मू॰ करांगुष्ठमूलोद्भवाधारामृतानुगां
रोगिणांसाक्षिणींसौख्यभाजम्॥
जलौकोरगाणांगतिंनाड्किापवि
धत्तेनिरुक्ताचवातात्मिकासा॥१५

टी॰ हाथकेअंगूठाकेनीचेरोगीमनुष्यकेप्राणाकीदेखा
लीऔरसुखऔरदुःखकीवतानेवालीनाड़ीरहतीहैसोव
हनाड़ीजोकअथवासर्पकीसीचालचलेजैसेजोकऔरस
र्पटेढ़ेवांकेचलेहैंतौउसनाड़ीकोपंडितोंनेवातकीनाड़ीकहीहै

मू॰ विधत्तेगतिंकाकमंडूकयोर्यामुनिं
द्रैर्निरुक्ताचपित्तात्मिकासा शिरा॰
हंसपारावतानांगतिंयादधातिस्थि
राश्लेष्मकोपाःन्विताता॥१६॥

टी॰ औरजोनाड़ीकाककीसीचालचलेअथवामेंडुक
कीसीचालचलेजैसेजानवरफुदकतेचलेहैंतौउसनाड़ी
कोमुनियोंनेपितकीनाड़ीकहीहैऔरजोनाड़ीहंशकीअथ
वाकवूतरकीसीअथधावनककीसीचालचलेजैसेंपेजान
वरमंदश्चालचलतेहैंतौउसकोकफकीनाड़ीवैद्यकहतेहैं

मू॰ अग्रेवातवहानाड़ीमध्येवहतिपि
त्तला अंतेश्लेष्मविकारेणत्रिधा
नाड़ीपरीक्षणम्॥१७॥

टी॰ अवनाड़ीकेजाननेकीरीतिकहतेहैंमवसैआगें॰

अंगूठे के नीचे रोगी के और वैद्य की पहिली अंगुली के नीचे वा दी की नाड़ी चलती है और के अंगुली के नीचे पित्त की नाड़ी चलती है और पिछली अंगुली के नीचे कफ की नाड़ी चलै है यह मत भावप्रकाशवाले का और शारङ्गधरवाले का और हंसराजवाले का और वैद्यरत्न जो जैपुर के महाराज ने अमृतसागर ग्रंथ जो कि बहुत से वैद्यों की संमति से और बहुत प्राचीन ग्रंथों से बनाया था सो उस ग्रंथ का भी यही मत है ॥१८॥

मू. वाताधिकाग्रहेन्मध्येत्वग्रेवहति पित्तला अंतेचवहतेश्लेष्ममिश्रि तेमिश्रिताभवेत् ॥१६॥

टी. अब पिछले से विरुद्ध वचन लिखते हैं बात की नाड़ी बीच में चलती है और पित्त की नाड़ी आगे चलती है अंत में अर्थात पिछाड़ी में कफ की नाड़ी वहती है और जो मिश्रित अर्थात मिले हुये हों तो मिली हुई नाड़ी चलती है ये मत नाड़ीज्ञान तरंगिनीवाले तथा नाड़ीज्ञानवाले का तथा हारीतसंहितावाले का तथा यत्नवालों का तथा कालज्ञानवालों का तथा टोडरानंदवालों का इन सब ग्रंथों का यही मत है ॥१६॥

और ये ग्रंथकार ये दृष्टांत देते हैं ॥

मू. नृणांपुरस्सरंकृत्वायथावातोवहेद्द ली स्वानुगंचनृणांगुख्यपृष्यिमांव कगांयथा ॥२०॥

टी. जैसे पृथ्वी में जब अति पवन चलती है तब देरखने में

आतीहै किलहराको अगाड़ीभी बड़े वेगसे उड़ातीजातीहै
औरपिछाड़ीकाभी लहराखींचतीहै औरआपवीचमेंक्रम
गतिसेचलतीहै ॥२०॥

मू. एवंमध्यगतोवायुःकृत्वापित्तपुर
स्सरम् स्वानुगंकफमादायनाड्यंव
हतिसर्वदा ॥२१॥

टी. ऐसेनाड़ीमेंसदाआपमध्यमें टेढ़ीगतिसें होकर
पित्तकोअगाड़ीकरकेंकफकोपिछाड़ीलियेंवातचलतीहै

मू. अतएवचपित्तस्यजायतेचपला
गतिः वक्राप्रभंजनस्यापिवैद्यै
र्मंदाकफस्यच २२ वालाग्रेऽस्तिग
तिश्शीघ्रालक्ष्यापित्तविहृश्यतां ॥
मंदाऽनुगस्यवक्रायैमारुतोमध्य
गस्यह २३ तथाऽवेवचसातव्या
गतिर्दोषत्रिकोद्भवा नान्यथाता
यतेस्नायुगतिरेतद्विनिश्चितं २४

टी. इसीसेंपित्तकीचपलगतिवैद्योंकरिकेजाननेमें
आतीहै औरवादीकीटेढ़ीगति औरकफकीमंदगतिजानी
जातीहै २२ देखोप्रसिद्धहै किजजोरसोंहवाचलतीहै
जिसकोलोगआंधीकहतेहैंतरके अगाड़ीजोलहराउड
ताहैसोबड़ेवेगसेचलताहै औरजोपिछाड़ीउड़ताहैसो
मंदगतिसेंचलताहैवाचमेंवायुआड़ीटेढ़ीतिरछीप्रम

तीचलतीहै २३ तैसेहीयहांभीनाड़ीमेंवातपित्तकफकी गतिजाननाचाहियेऔरइसीरीतिसेंनाड़ीकीगतिविरोव रनिश्चैनहींहोतीहै ॥२४॥

अबग्रंथकारअपनामतकहताहै

अबजाननाचाहियेकियेजोकहतेहैंकिआगेवातकीऔर मध्यमेंपित्तकीऔरअंतमेंकफकीनाड़ीचलतीहैऔरबहुत सेकहतेहैंकिआगेपित्तबीचमेंवादीऔरअंतमेंकफअब· सोचनाचाहियेकिजबहमनेंआगेपित्तमानाऔरउसरोगी कोसर्दीहोऔरउससमयपित्तमानकरसीरीदवाईदीनीतो कहोवहरोगीजीवेगायामरैगाअथवाआगेवादीमानीऔर उससमयपित्तकीनाड़ीचलतीहोऔरवादीमानकरहमनेग रमदवाईदीनीतोकहोकीवोरोगीगरमीकेमारेमरैगाकीजी वैगावहेआश्चर्यकीवातहैकिकोईकहताहैदिनऔरकोई कहताहैरातबिनासोचेदवाकरतेहैंइससेहमारीसमझमें यहवातआतीहैकियेजोनाड़ीकेस्थानकहेहैंकिआगेवात· कीऔरकोईपित्तआगेवतलातेहैंसोयेवातभूंठीहैअसलमें चालजोलिखीहै काक·मेंडक·हंस·सर्प·जोंक·आदिकी हैसोठीकहैक्योंकिचालमेंयेकोईनहींकहताकिसर्पकीऔ रजोंककीचालवादीकीनहींहैपित्तकीहैऔरकाकबटेरमें डककीचालपित्तकीनहींहैवादीकीहैहंसकबूतरऔरबतक कीचालकफकीनहींहैवातकीअथवापित्तकीहैऔरआर्षग्र न्थपुरानेग्रंथोंमेंयहबखेड़ाकहींनहींकराकिआगेवादीय

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पित्तऔरयेबातप्रसिद्धहैकिजोबातभंगीहोतीहैउसकाभं
गड़ाहोताहैयेकभीनहींहोसकेकिसांचीबातपैभगड़ाहो
।क्योंकिसांचीबातकोसबमनुष्यकहतेहैंकियहबातसांची
है इससेनाड़ीकीचालतौसबग्रंथोंमेंबराबरएकमिलतीहै
औरस्थाननहींमिलतेहैंइससेयेबातभंगीहैऔरइसमेंभी
जिनमनुष्योंकोभ्रमहोयवेहमसेपूंछलेवेंअबप्रसंगवससे
एकभगड़ाऔरभीकहतेहैंकिबहुतसेमूर्खोनेंदमतिमंद
इसतरहसेकहतेहैं॥प्रश्न॥ यथा॥

मू॰ स्त्रीणांभिषग्वामहस्तेपुरुषाणां
तुदक्षिणे नपुंसकस्यकहस्तेद्र
ष्टव्यानाडिकाबुधैः॥२५॥

टी॰ अर्थातस्त्रीयोंकेबांयेहाथमेंऔरपुरुषकेदहिने
हाथमेंनाड़ीपंडितोंकोदेखनीचाहियेऔरनपुंसककीना
ड़ीकोनसेहाथमेंदेखनीचाहियेइसकाजबाबयहहैकिन
पुंसककेभीदोभेदहै एकतोहिजड़ीदूसराहिजड़ाहिज
ड़ीकाबांयाहांथदेखेंऔरहिजड़ेकादायांहांथदेखेंजोकोई
कहेकिनपुंसकएकहीप्रकारकाहोताहैउनअज्ञानियों
कोहमप्रत्यक्षदिखासक्तेहैं॥२५॥

स्त्रीपुरुषाणांनाड़ीभेदकारणमाह

मू॰ स्त्रीणामूर्द्धमुखः पुंसामधोवक्रःप्रकी
र्तितः नाभिस्थानेमनुष्याणांकच्छ
पोतिष्ठतेसदा ज्ञेयास्त्रदक्षिणेभागे

नाड़ीतस्यभिषकवरैः अनेकका
रणोनैवनारीपुंसोर्मतोक्रमः ॥२७॥

टी॰ ओरजोपीछेकहिआयेहै कि पुरुषकी दहिनेहांथ
कीदेखैंओरस्त्रीकेवामहांथकीदेखैं इसकाकारण यहहै कि
स्त्रीकेऊंचामुखकरैओरपुरुषकेनीचामुखकरैनाभीस्थान
मेंकच्छपसवमनुष्यके रहताहै २६ उसके दहिनेभागमेंना
ड़ीवैद्योंको देखनी चाहियेइसीकारणसेंस्त्रीकीओरपुरुष
कीनाड़ीमें फर्कहै ॥२७॥

स्वस्थनाड़ीलक्षणं

म॰ क्ष्मानागसदृशीप्रायःस्वच्छस्वस्थ
स्यवैशिरा सुखितस्यास्यात्तथात
थावलवतीमता ॥२८॥

टी॰ सुखीमनुष्यकीनाड़ीकेंचुयेजानवरकीसी चालसे चल
तीहैओरस्वच्छस्थिरबलसंयुक्तहोतीहै ॥२८॥

म॰ प्रातःस्निग्धतरानाड़ीमध्यान्हेप्यु
ष्णताऽन्विता सायान्हेधावमाना
चज्ञेयारोगविवर्जिता ॥२९॥

टी॰ नैरोग्यमनुष्यकीनाड़ीप्रातःकालमेंस्थिरचिक्कण
सदाचलतीहैओरमध्यानमेंकुछगरमीसंयुक्तनाड़ीचल
तीहैओरसायंकालमेंजल्दीगतिसेनाड़ीचलतीहै २९

म॰ वाताद्वक्रगतिनाड़ीपित्तात्स्युग
मनी कफान्मंदगतिर्ज्ञेयासन्निपा

तादृग्गतिद्रुतम् ॥३०॥

टी॰ वातमेंनाड़ीवक्रगतिसेचलतीहै औरपित्तमेंचं चलहोतीहै औरकफमेंमंदगतिचलतीहै औरसन्नि पातकीनाड़ीवक्रतजल्दी२ चलतीहै ॥३०॥

मू॰ मुहुःसर्पगतिंनाड़ीमुहुर्भेकगतिं
तथा तर्जनीमध्यमामध्येवात
पित्तेऽधिकेस्फुटम् ॥३१॥

टी॰ वारम्बारसर्पकीगतिचले औरबारम्बारमेडककी गतिचले औरपहिलीबीचकीअंगुलीकेनीचेचलैटेढ़ी औरजल्दीजलैउसेवातपित्तकीनाड़ीसमझनीचाहिये॰

मू॰ सर्पहंसगतिंतद्वद्वातश्लेष्मव
तींवदेत् अनामिकायातर्जन्यांम
ध्याबातकफेभवेत् वहेद्धकंचमं
दंचवातश्लेष्माधिकेत्वनः॥३२॥

टी॰ उसीतरहसर्पहंसकबूतरकीचालचलैऔरअना मिकातथातर्जनीअंगुलीकेनीचेचलैटेढ़ी औरमंदच लैतोउसकोवातकफकीनाड़ीसमझनीचाहिये ॥३२॥

मू॰ हरिहंसगतिंधत्तेपित्तश्लेष्मान्वि
ताधरा मध्यमानामिकामध्येस्फु
टापित्तकफेऽधिके ॥३३॥

टी॰ सिंहऔरहंसकीचालचलैबीचकीअंगुलीके नीचेऔरपिछलीअंगुलीकेनीचेचलैऔरजल्दीतपा

मंद चले तो सनाड़ीकोपित्तकफकीकहनी चाहिये ॥ ३३ ॥

सन्निपातकीनाड़ीकेलं.

मू. त्रिदोषान्विता नाड़िका चंचलो ·
भास्फुरद्विविरूपात्त्वरायुग्विभिन्ना
गतिं तत्तरीयां विधत्तेति कंपक्षरा
क्षीरात्तांयातिमूर्छांक्षचित्सा ॥ ३४ ॥

टी. जोनाड़ीत्रिदोषयुक्त अर्थात् सन्निपातकीनाड़ी चंचलऔर गरमऔरकभीकेसी चलैजल्दीचलैऔरतीतरीकीसीचालचलैऔरकांपैऔरकभीछीनपरिजायऔरखलते२रहिजायवोनाड़ीआयुकीकाटनेवालीहै ॥ ३४ ॥

मू. काष्टकुट्टोयथाकाष्ठकुट्टतेचाति
वेगत स्थित्वास्थित्वातथानाड़ी
संनिपातेभवेद्ध्रुवम् ॥ ३५ ॥

टी. जैसेलकड़ीकाफारनेवालामनुष्यअतिवेगसेंकाठकोंठहर२करफारताहै तैसेंसन्निपातकीनाड़ीचलतीहै ३५

मू. शिरायस्यवातार्दिता पित्तदग्धाक
फेनालिकोपेननाड़ीक्षतासा गदी
सोल्पकालेनमृत्योर्विदीर्णेसुखेषा
स्यतेदंतदंष्ट्राभिकीर्णो ॥ ३६ ॥

टी. जिसरोगीकीनाड़ीबातसेंदूषित औरपित्तसेंदग्धऔरकफकाअत्यंतकोपहोवोमनुष्यथोड़ेदिनमेदांतदाढ़युक्तखुलेहुयेमृत्युकेमुखमेंजायगाऐसेवैद्यजानैं ॥ ३६ ॥

मू· मंदंमंदंशिथिलशिथिलंव्याकु
लंव्याकुलंवा स्थित्वास्थित्वावह
तिधमनीयातिसूक्ष्मानराणान् ॥
नित्यंस्थानात्स्खलतिपुनरप्यंगु·
लींसंस्पृशेद्वाभावैरेवंबहुविधत
रैः सन्निपातेत्वसाध्या ॥३७॥

टी· जिसरोगीकीनाड़ीधीरे२ऋौरशिथिल२ऋौरव्याकु
ल२चलतीहोयऋौरठहर२केऋतिसूक्ष्मऋौरनिरंतरस्था
नकोछोड़केंफिरऋंगुलीनकोस्पर्शकरैंऐसेऋनेकलक्षण
युक्तसन्निपातकीनाड़ीऋसाध्यहै ॥३७॥

मू· महादाहेऽपिशीतत्वंशीतत्वेतापि
ताशिरा नानाविधागतिर्यस्यतस्य
मृत्युर्नसंशयः ॥३८॥

टी· जिसरोगीकीनाड़ीदाहमेंशीतलहोयऋौरजब·
शरीरशीरहोयतवनाड़ीगरमहोयऋौरजिसनाड़ीकी·
चालतरह२कीहोउसरोगीकीमृत्युहोयइसमेंसंशयनहीं।

मू· कंपतेस्पंदतेऽत्यंतंपुनस्पृशतिचां
गुलीम् तामसाध्यांविजानीया·
न्नाडीदूरेणवर्ज्जयेत् ॥३९॥

टी· जिसरोगीकीनाड़ीकांपतीचलतीरहिजायऋौर·
फिरऋंगुलीनकोस्पर्शकरैवहनाड़ीऋसाध्यजानिकैंवाकोनिषेध

मू· स्पंदतेचैकमानेननाड़िंशद्वारंयदाधरा

स्वस्थानेनतदान्ननंरोगीजीवति·
नान्यथा ॥४०॥

टी· जिसरोगीकीनाड़ीएकवारमेंअपनेस्थानपरतोसवेरा
फड़केतौरोगीजीवेऔरजोकमतीफड़केतौनहींजीवे ॥४०॥

मू· स्थिरानाड़िभवेद्यस्यविद्युद्युतिरिवे·
क्ष्यते दिनैकंजीवितंतस्यद्वितीयेमृ
त्युरेवच ॥४१॥

टी· जिसरोगीकीनाड़ीस्थिरहोयऔरविजलीकीतरह
रहरकैचलैविषकीआयुएकदिनकीहैदूसरेदिनमृत्युहोसेजानना

मू· अतिसूक्ष्मातिवेगावाशीतलावभ
वेद्यदि तदावैद्योविजानीयात्थंरो
गीविनश्यति ॥४२॥

टी· जिसरोगीकीनाड़ीअतिमंदऔरअतितेजभैंचलती
होयऔरशीतलहोयतौवोरोगीमरैसासैंवैद्यजानें ॥४२॥

मू· निर्घगुणाचयानाड़ीसर्पवद्वेग
वत्तरा कफपूरितकंठस्यजीवि
तंतस्यदुर्लभम् ॥४३॥

टी· जिसरोगीकीनाड़ीटेढ़ीऔरसर्पकीसीचालचलेऔर
कंठकफकरकैंभराहोयतिस्काजीनादुर्लभहैऐसैंवैद्यजानें ॥४३॥

मू· दृश्यतेचरणोनाड़ीकरेनैवविदृश्य
ते मुखंविकसितंयस्यजीवितं·
तस्यदुर्लभम ॥४४॥

टी॰ जिसरोगीकीपगकीनाड़ीचलतीहोऔरहाथकीन चलतीहोऔरमुखफवरहाहोतिसरोगीकाजीनावड़ाकठिन है

मू॰ शीघ्रानाड़ीमलोपेताशीतलावा
प्यदृश्यते द्वितीयेदिवसेमृत्युना
डीभिज्ञाद्रुमाषितम् ॥४५॥

टी॰ जिसरोगीकीनाड़ीजल्दीऔरमलयुक्तचलतीहो वाशीतलचलतीहोयतिसरोगीकीमृत्युदूसरेदिनहोय येनाड़ीकेजाननेंवालोंनेकहाहै ॥४५॥

मू॰ मुखेनाड़ीयदानास्तीमध्येशैत्यं
बहिस्तमः यदामन्दावहेन्नाड़ी
त्रिरात्रंनेवजीवती ॥४६॥

टी॰ आगेकीनाड़ीचलेनहीऔरबीचमेंअर्थात्शरी रकेभीतरशीतलताहोयऔरबाहरगरमीमालूमहोयऔ रनाड़ीबहुतमंदरचलेवोरोगीतीनरात्रीभीनहींजीवे ॥४६॥

मू॰ शीघ्रानाड़ीमलोपेतामध्यान्हेग्नि
समोज्वरः दिनैकंजीवितंतस्यद्वि
तीयेन्हिम्रियेतसः ॥४७॥

टी॰ जिसरोगीकीनाड़ीमलयुक्तहोयऔरमध्यान्हमेंअ ग्निकेसमानज्वरहोयसोरोगीएकदिनजीवेदूसरेदिन रे ॥४७॥

मू॰ हिमवच्छीतलानाडीज्वरदाहेन
तापिता त्रिदोषरुग्विमंजतोमृत्यु
रेवदिनत्रयात् ॥४८॥

टी॰ जिसरोगीकीनाड़ीश्रोलेसरीकी वंदीहोयश्रोरज्वरके दाहकरीके तपायमानहोश्रोरत्रिदोषरोगश्रर्थात्सन्निपातलक्षणभीहों तिसकी मृत्युतीनदिनमेंहोय ॥४८॥

म॰ स्वस्थानविच्युतानाड़ीयदावहति
वानवा ज्वालाचहृदयेतीव्रानदा
ज्वालावधिस्थितिः ॥४६॥

टी॰ जिसरोगीकीनाड़ीश्रपनेस्थानकोछोड़कैंकभीचलै कभीनचलैश्रोरहृदयमेंज्वालातीव्रहोयतौजवतकज्वालाहोयतवतकवहरोगीजीवैगा ॥४६॥

म॰ श्रंगुष्टमूलतोवाह्येध्यंगुलेयदि॰
नाड़िका प्रहरार्द्धाद्धिमृत्युंजा
नीयात्तविचक्षणै: ॥५०॥

टी॰ श्रंगुष्टकेमूलमेंदोश्रंगुलछोड़कैंजोनाड़ीचलती॰ होयतौवहरोगीश्राधेपहरपीछेश्रवस्यमरैगा ॥५०॥

म॰ मध्यरेखासमानाड़ीयदितिष्ठति
निष्फला षड्भिश्चप्रहरैस्तस्यमृत्यु
र्नेयाविचक्षणैः ॥५१॥

टी॰ जिसकीनाड़ीवातस्थानमेंजोरेखसरीखीनिश्चलचलतीहोयतिसरोगीकीछप्रहरपीछेमृत्युहोय॥५१॥

श्रथसाध्यनाड़ीलक्ष॰

म॰ पूर्वंपित्तगतिंप्रभंजनगतिंश्लेष्मा
णामाविभ्रतीं स्वस्थानाद्भ्रमणंमुहु

विधतींचक्रादिरूढामिव तीव्रत्वं
दधतींकदाचिदपिवासूक्ष्मात्वमा
तन्वतीं नासाध्यांधमनींवदंति
सुधियोनाड़ीगतिज्ञानिनः ॥५३॥

टी॰ अवरोसेलक्षणयुक्तनाड़ीभीइसीरीतिसेसाध्यहै॥
सोकहतेहैं जोनाड़ीस्पर्शसमयमें प्रथमपित्तकीगतिचले
फिरवातगति फिरकफगतिचलैऔरआपकेस्थानसेभ्रष्टहो
तौहुई वारंवार जैसेचक्रपरस्थितहोयइसतरहचलैकभीतो
व्रकभीमंद चलैतौउसरोगीकीनाड़ीकोनाड़ीज्ञानवालेअ॰
साध्यनहींकहतेहैं ॥५३॥

मू॰ भारप्रवाहमूर्छाभयशोकप्रमुख॰
कारणान्नाड़ीसंमूर्छितापिगाढं
पुनरपिसाजीवितंधत्ते ॥५४॥

टी॰ बोझकेलेचलनेसें मूर्छासें डरसें सोचसेंजोनाड़ी
मूर्छितभीहोतौभीसाध्यहै ॥५४॥

मू॰ भूतावेशयुतस्यापिनष्टभ्रुक्तस्यना
ड़िका त्रिदोषगमनाचापितद्वा
चापिनमृत्युदा ॥५५॥

टी॰ जिसरोगीकीनाड़ीभूतावेशयुक्तहोंअथवा॰पतित॰
संधितोभेदी॰)यहदूसरापाठभेदहैइसकायेअर्थहैकिगिरप
ड़नाऊंचेस्थानसेशस्त्रआदिकेलगनेसेमर्मस्थलमेंचोटअ
वैउससेऔरधातुकेक्षीणहोनेसेंजोनाड़ीसन्निपातकीसी

चलैतोऔरमंदचालचलैतोभीमृत्युदायकनहींहै ॥५५॥

मू: मोहेनकामेनभयेनचिंतयाक्रोधे
नलोभेनवहुभ्रमेणवा मंदाग्नि
नोद्वेगतरेणपीडयास्यान्नाडिका.
मंदतराचृणांभृशम् ॥५६॥

टी. मोहकरकेकामकरकेभयकरकेचिंताकरकेकोधकरके
लोभकरकैवहुतसभ्रमकरकेमंदाग्निकरकेउदवेगकरिके
पीडाकरिकेनाड़ीअत्यंतमंदचलतीहैसोकुछडरनहींहै।

मू: स्वस्थानहीनाशोकेचहिमाक्रांते
चनिर्गदाः भवंतिनिश्चलानाड्यो
नकिंचित्तत्रबैभयत् ॥५७॥

टी. शोकऔरशीतलगनेमेंस्थिरनाड़ीहोपतौभीभयनहीं

मू: लोकंवातकफंदुष्टंपित्तंवहतिदा
रुणं पितस्थानेविजानीयात्तत्रभे
षजमाचरेत् ॥५८॥

टी. थोड़ावातकफनष्टभयाहोयऔरपित्तदारुणच.
लैतोऔषधवैद्यदेवै ॥५८॥

मू: स्वस्थानच्यवनंयावद्धमन्यानोप
जायते नष्टचिन्हस्यसत्वपिनासा
ध्यत्वमीरितम् ॥५९॥

टी. नाड़ीकाविलकुलस्थानभ्रष्टनहोयऔरत्रिदोष
केचिन्हहोयतौभीअसाध्यनहींहै ॥५९॥

अथभोजनवशान्नाडीगति

मू. पुष्टिस्तैलगुडाहारेमांसेचलगुडा
कृतिः क्षीरेस्तिमितिवेगाचमधु
रेहंसगामिनी ६०॥

टी. अबभोजनकेसबबसेनाड़ीकीचाललिखतेहैंते
लओरगुडकेखानेसैंनाड़ीपुष्टहोतीहै ओरदखानेसेंला
ठीकीआकारहोतीहै दूधकेपीनेसें मंद गतिचलतीहै
मिष्टभोजनसेहंसकीसीचालचलतीहै ॥६०॥

मू. मधुरेबर्हिगानाडीतिक्तेस्थूलग
तिर्भवेत् अम्लेभेकगतिःकोष्ण
कटुकेभंगसंनिभाः ॥६१॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

टी. मधुरभोजनसेनाड़ीमोरकीचालचलतीहै तीखे
भोजनसेस्थूलगतिहोयहै खटाईसेंकछुगरमओरमेंडककी
चालचलतीहैकडुवेखानेसेंमोरकीगतिचलतीहै ॥६१॥

मू. कषायेकठिनाम्लानालवणेसर
लाद्रुता एवंद्वित्रिचतुर्योगेनाना
धर्मवतीधरा ॥६२॥

टी. कषैलेभोजनसेकठिनओरम्लीनअर्थात्कुछ
मंदचलतीहै लवणरसभक्षणमेंसीधीऔरजल्दीचल
तीहैऐसेहीदोतीनचारस्वादमिलनेमैंनाप्रकारकीचालच

मू. द्रवेतिकठिनानाड़ीकोमलाकठि
नाशने द्रवद्रव्यस्यकाठिन्येकोम

लाकठिनाः पिच ॥६३॥

टी॰ पतलीवस्तुजैसेदालकढ़ीइत्यादिखानेसेंअतिकठिननाड़ीचलतीहै औरकठिनभोजनसेकोमलचलतीहै औरजोद्रमद्रमकठिनतालियेहोयतोकोमलऔरकठिनचलतीहै

मू॰ द्रव्यैश्चमधुराम्लाद्यैर्नाडीशीताविशेषतः चिपिटैर्भृष्टद्रव्यैश्चस्थिरामंदतराभवेत् ॥६४॥

टी॰ खट्टेमीठेमिलेहुयेखानेसेंनाड़ीविशेषकरकेठंढीचलतीहै पिसेहुयेअन्नकेखानेसेंवाभुजेहुयेअन्नकेखानेसेंनाड़ीस्थिरऔरमंदगतिचलतीहै ॥६४॥

मू॰ कूष्मांडैर्मूलकैश्चैवमभवेन्मंदाहि नाडिका प्राकैश्चकंदलैश्चैवरक्तपूर्णेवसाभवेत् ॥६५॥

टी॰ पेठेसेजिस्कोकुह्मड़ापुर्ववियेकहतेहैंऔरमूलीसें नाड़ीमंदहोतीहै साकऔरकेलेकेखानेसेंरोगीमनुष्यकीनाड़ीरक्तपूर्णकीसीहोतीहै ॥६५॥

मू॰ मांसास्थिरवहानाडीदुग्धाच्छीतावलीयसी गुडक्षीरेस्सपिष्टैश्च स्थिरामंदाधराभवेत् ॥६६॥

टी॰ जिसनेमांसखायाहोयउसकीनाड़ीस्थिरदूधसेठंढीऔरबलयुक्तगुडदूधऔरपिष्टसेस्थिरऔरमंदचलतीहै॥६६

मू॰ मैथुनांतेभवेत्तीव्रासरलाप्चिना

ड्डिका मलाजीर्णेननितरांस्पंदते
तंतुसन्निभा ॥६७॥

टी· मैथुनकेअंतमेंनाड़ीजल्दीचलतीहैऔरसीधीच
लतीहैमलकेअवरोधसेधतूरेतथाअजीर्णमेंतंतुकेसमानचल

मू· आयामेभ्रमसोचैवचिंताथांधन·
शोकतः नानाप्रकारगमनाजी·
वितत्ताभवेध्रुवम् ॥६८॥

टी· डंडकसरतकेकरनेसेचिंतासेनष्टधनसेंसोचसेना
ड़ीकीगतिनानाप्रकारकीहोतीहै ॥६८॥

मू· अजीर्णेतुभवेन्नाड़ीकठिनापरि
तोजड़ा पक्वाजीर्णेपुष्टिहीनामं
दंमंदंप्रवर्तते ॥६९॥

टी· अजीर्णमेंनाड़ीकठिनऔरजड़होतीहैऔरपक्वा
जीर्णमेंपुष्टिहीनऔरमंदगतिसेनाड़ीचलतीहै ॥६९॥

मू· पादेचहंसगमनाकरेमंडूकसंप्ल
वा तस्याग्नेःमंदतादेहेत्वथवा
ग्रहणीगदः ॥७०॥

टी· जिसकेचरणमेंतोनाड़ीहंसकीसीचालचलेऔर
हाथमेंमेंड़काकीचालचलेउसकेमंदाग्निकहनीअथवा
संग्रहणीकारोगकहनाचाहिये ॥७०॥

मू· आमाश्रयेपुष्टिविवर्द्धनेनभव
तिनाड़ीभुजगेकवृत्ताः आहार

मांद्यादुपवासतोवातथैवनाड्यो
भुजगप्रमाणाः ॥७१॥

टी॰ आमाशयकेबढ़नेसें तथादुष्टताकेहोनेसेसर्पकेआ
कारनाड़ीचलतीहै भोजनकेमंदपड़नेसेऔरउपवासकेक
रनेसेंभीसर्पकेआकारनाड़ीचलतीहै ॥७१॥

मू॰ भूतज्वरेसेकहुवातिवेगाधावंति
नद्योहिपयाब्धिगामाः एकाहि
के नक्तदप्रहरेक्षणांतगामाविष
मज्वरेणः ॥७२॥

टी॰ भूतज्वरमेंजलकेशहसअतिवेगसेचलनेवाली
नाड़ीहोतीहै जैसेनदीअतिवेगसेसमुद्रमेंजातीहै ए
काहिकज्वरसेतथाकुछठहरकरचलनेवालीहोतीहै॰

मू॰ द्वितीयकेवायत्ततीयतुर्य्ययोर्ग
च्छंतिनमाभुमिवक्रमेण कोप॰
जेसंगत्ल आंगासससंगाकामजेज्वरे

टी॰ द्वितीयततीय चतुर्थकज्वरमेंनाड़ीनमडुईभौ
राकेशहस चलतीहै कोपज्वरमेंजल्दीचलतीहै और
कामज्वरमेंभीएकसीनाड़ीचलतीहै ॥७३॥

मू॰ अनाहेमत्रकृच्छ्रेचभवेन्नाड़ीग
रिष्टता वातेनयलेनमहास्रवेन॰
मदोपवकाहिशिराववहंति॥७४॥

टी॰ अनाहरोगमेंतथामूत्रकृच्छ्रमेंनाड़ीभारीहोतीहै

औरवादीकेदर्दमेंतथावादीकेरोगमेंसदानाड़ीटेढ़ी
चलतीहै ॥७४॥

मू· विसूचिकाभिभूतेचनाडिका
भेकसंक्रमा प्रमेहेचोपदंशेच
गुंफिरूपाधरास्मृता ॥ ७५॥

टी· विसूचिकारोगमेंनाड़ीमेंडकेकीचालचलतीहै
प्रमेहरोगमें औरउपदंशमेंगुंफिकहियेगांठकेआकार

मू· वांतस्यशल्याभिहतस्यजंतोर्वे
गावरोधाकुलितस्यचैव गतिं
विधत्तेधमनीगजेंद्रमरालका·
नांचकपोल्वरास्य ॥७६॥

टी· जिसनेछर्दईअर्थातउलटीकीनीहोअथवा
जिसकेतीरवगैरहलगाहोयअथवाजोमलादिकचोदह
वेगोंसेआकुलहोयअथवाजिस्केकफबहुतसाहोयतिनि
सकीनाड़ीहाथीऔरहंसकीसीचालचलतीहै ॥७६॥

अथडाकरमतानुसारेण·

मू· वदकांतवदामिवल्लभनाडीज्ञान
मतीवसुंदरं भुशुण्डाकरशास्त्र·
सम्मतंयज्ज्ञात्वार्यसुखंलभेन्नरः
अवडाकरीमतकेअनुसारनाड़ीकीपरीक्षालिखतेहैं·

टी· हेहेप्यारेडाकरीमतअनुसारनाड़ीकोज्ञानकहो
हेप्यारीमैंडाकरशास्त्रसंमतअतिसुंदरनाड़ीकाज्ञानकहूं

ताहै जिसनाड़ीकोजानकरधनश्रोरसुखकोप्राप्तहोताहै

मू. नरजन्मकालतःप्रियेयावत्खा
घ्रशरत्सुजीवनं गगनाब्धिचंद्र
सम्मितान्द्यामिंटावथमनी प्रगच्छति

टी. हेप्यारी मनुष्यकेजन्म समयसेलेकर श्रोरजबतकश्र
स्सीबरसकाहोयतबतककीनाड़ीचालकहताहूं जिससम
यइसमनुष्यकाजन्महोताहेउसवक्तएकमिंटमें१४०एक
सौचालीसबारनाड़ीकंपमाननिरंतरहोतीहे ॥७८॥

मू. श्राजन्मवर्षांतमतीवचंचलाखरा
मचंद्राचलतीहनाड़िका कालेन
मिराटैकमितेनवर्षद्वयांतमथैकध
रामितातथा ॥७६॥

टी. श्रोरवर्षपर्यंतइसबालककीनाड़ीएकमिराटमें१३०बारकं
पमानहोतीहे श्रोरवर्षदिनसेलेकरदोवर्षपर्यंतकेबालककीना
ड़ीएकमिराटमे११०बारनाड़ीकंपमानहोतीहे ॥७६

मू. त्रिवत्सरंप्राप्यमुहुःप्रकंपतेकालेन
तेनैवप्रांतंचनाड़िका खाद्रापुनर्ग
च्छतिसप्तवर्षमाप्यायकांतेधमनी
नरस्य ॥८०॥

टी. दोवर्षपीछेतीनवर्षतकएकमिराटमें१००बारनाड़ीच
लतीहे श्रोरतीनवर्षसेलेकरसातवर्षकेबालककीनाड़ी
एकमिराटमें हेकांतेनब्बेबारचलतीहे ॥८०॥

मू· तदूर्द्ध्वमिन्दुवत्सरंशराष्टगाच्चनाडि
का त्वशीतिगारवरामवर्षमतेक्षरो
ततः प्रकम्पते शराद्विवारमेकना
डीकाप्रियेशताद्दुवत्सराऽवधित
तश्चरवाष्टवर्षकम् ॥८१॥

टी· सातवर्षकेउपरांतचौदहवर्षतकएकमिनटमें८५ पिचासीवारनाडीकंपमानहोतीहै औरचौदहवर्षपीछे तीनवर्षपर्यंत ८० अस्सीवारनाडीचलतीहै इसअङ्कुतेक्षरगो तीसवर्षसेलेकरपंचासवर्षतकनाडी ७५ वारकंपमान· होतीहै औरपंचासवर्षकेपीछेअस्सी ८० वर्षतकनाडी ६० वारकंपमानहोतीहै इसश्लोककाअन्वयदूसरेश्लोकजोअगाडीकाहैउसकेसाथलगतीहै ॥८१॥

मू· कंपतेषष्टिवारंचकालेमिंटैकसं
स्थिके ततक्रमानाड्डवेन्न्यूनाऽधि·
काशीतोस्सदाधरा ॥८२॥

टी· येजोपिछाडीकहिआयेनाडीचलनेकीसंख्याउसेकमतीचलैतोमरदोंकीऔरजादाचलैतोपितकीनाडीजाननी

मू· ऋषिधनंजयनन्दशशाङ्कमितपरि
मितेविधुविक्रमवत्सरे ऊर्यामिते
दशमीबुधवासरे धमनिकासम·
गातरवल्लुपूर्णताम् ॥८३॥

टी· ऋषिकहियेसातधनंजयकहियेतीननंदकहियेनै

सशांकअनंकहि येएकअर्थात् १९३७ विक्रमसम्वत्‌मेंश्री
स्थाश्विनशुक्लादशमीवुधवारकोधर्मनिकासअर्थीत्‌ना
डीप्रकाशग्रंथपूर्णहुश्रा ॥ ८३॥ इतिशुभम्भूयात्‌ ॥·

इतिनाड़ीप्रकाशग्रंथसंपूर्णशुभम्‌॥

अबअपनीअजमाईहुई

कुछदवालिखतेहैं॥

प्रथमशरीरकेपुष्टकरनेकाइलाकरी रतिवर्द्ध नपाकलिखतेहैं·

पीपर·पीपरामूल·अकरकरा·वायविडंग·मासटी
कजिनशीयानारूद एसवदवाएकरतोलालेनीश्री
रहड़कावक्कल आसोरिया सपेदमूसली कालीमूस
ली सालम वलबीज इरवरोट छोडेइलायचीकेबीजछि
लेहुयेपिलाककड़ीकेबीजकीमिंगी तरवूजकेबीजकीमिं
गीएग्यारहदवातीन२तोलालेनी श्रौरमेथी इंद्रजो मी·
ठेन्कीमिंगी सालममिश्री तज नारियलकीगिरी एपांच
दवा पांच२तोलेलेनी खस२ सोंठ सुश्राकोसागसरवा वा
दामकीमिंगी वेदाना सिंघाड़ेकीगिरी ए छः बीजपाव२भ
रलेय गोखरू चिरौंजी कमलककड़ीए तीनचीजश्राध२
पावलेय क्वासटोरीश्रम जामफल जायपत्री केशर
कालीमिरचधुलीहुई नारंगीकीछाल ए छः दवाश्राध
२तोलेलेनी अंबरकस्तुरी परीपेपेरीइग्रइरनप
श्रोडर एतीनदवाएक२मासेलेनी सोनेकेवर्क३५पंद्र

चांदी के वर्क ३० तीस बबूर का गोंद तीन पाव ऽ।।। गेहूं का स
तसक ऽ३ सेर खांड ऽ३॥ साढ़े तीन सेर गाय का घी ऽ२ दो सेर
लेना अब जो दवाई अंग्रेजी होवैं वो दवा अंग्रेजी दूकान पर
से लेनी अंग्रेजी दवा हिंदुस्तानी दूकान पर से न लेनी और
वाकी सब दवा हिंदुस्तानी दूकान पर से नई देख कर सब ले
नी और अंबर कस्तूरी केशर जो अच्छी नहीं मिले तो स
वी सब दवा अंग्रेजी दूकान पर से लेनी एद वा अलग २ कू
ट कर जो दवा कपड़छान करने लायक होंय उनै कपड़छान क
रे फिर गाय का दूध ले उसका खोवा सद दवा डाल कर कै पीछे गे
हूं का सत घी में भूनै फिर उसै काढ कर मिश्री की चासनी करै
फिर उस चासनी में भुना हुआ गेहूं का सत और सब दवा मिला
हुआ खोवा डाल कर पाक बनावै फिर उस पाक को अच्छे वासन
में धर राखैं और उसमें से तीन तोला रोज खावा पाकै वलावल दे
खिकै तीन तोले से लेकर दश तोले तक तो बीस प्रकार के प्र
मेह दूर हो धात का गिरना तथा धात का पतला होना दूर होय
स्तंभन २ दो घंटे का होय इंद्री महां सख्त होय इस पाक के खा
ने से वृद्धा भी जवान होय बहुत लिखना व्यर्थ है इसका खाने
वाला मनुष्यनों न खटाई तेल गुड़ मिर्च दही और जो गरमी
के करनेवाली वस्तु हैं तिनको न खावैं यमै मैं महेश चंद्र वाबू
डाकृर खदेथानवाले की किताव में जो नसके अजमायश के
करे उकसाये उसमें से बहुत खुसामद से लेकर लिखा है इति
रतिवर्द्धन पाक समाप्तम् ॥ शुभम् ॥

लेपत्रनुभूत·

मू· मरिचंसैंधवंकृष्णातगरंबृहतीफ
लं अपामार्गंमिलाकुष्टंयवमा·
षाश्चसर्षपाः अश्वगंधाचसर्वे
षांसूक्ष्मचूर्णंतुकारयेत् मधुना
लेपनंकार्यंलिंगदार्ढ्यकरंपरम्
सतैरष्टगुणंक्षीरंतिलतैलंचतु
र्गुणाम् ॥८३॥

टी· मरिचसेंधानोनपीपरतगरकटेल्लीकेफलओंगाम
नसिलकूठजौकाचूनउड़दकाचूनसरसोंअसगंधसबदारू
दवाओंकोरखवपीसकरऔरसहतमिलाकरलिंगपरलेपक
रैतौलिंगमहादृढहोयऔरदूधसेअठगुनाऔरतिलके
तेलसेजोसहतमेंलगानेसेंगुनकहेहैंउससेचौगुनाहोयहै

अथ दीवालमुस्कगर्भ

कस्तूरी६रत्तीसवादोचामल सोंठपीपरयेदोनोंदोमासे
६चामलमोतीअनवींधेपौनेदोसे मूंगेकीजड़पौनेदोमा
सेरेसमकतराकुआपौनेदोमासे वेहमनसफेददोमासे६
चामल वेहमनसुर्खदोमासे६चावल तेजपातदोमासे६चा
वलवालछड़२मासे६चावल वड़ीइलायचीर२मासे६चाव
ल जुंदवेदुस्तर२मासे६चावल गोंद२मासे६चामल छड़ी
ला२मासे६चावल इनसबदवाओंकोवियकेसहतमेंमि
लायकेधरकेजाड़ोंमेंखायरवुराक तीनमासेसेलेकरस

तमासेतककीहै इसकेखानेसेसिरकादर्शवादी सेजोहो
यउसकोदूरकरैश्रौरमृगीफालज श्रौरलकवाश्रौरलंग
सामश्रौरजोफमादाश्रौरजोफदिलश्रौरबावलापना
श्रौरचौथियाज्वरकोदूरकरताहैश्रौरहामलेश्रौरतोंके
रहाकोदफेकरताहैश्रौरचेहरेकारंगगोराकरैहै इति॥

॥श्रथसवेदुखहरनमहाजुल्लाबश्रनुभूत॥

प्रथमभुंजिसकीदवालिखतेहैं खोड़ाककईकेबी
जधेलेभर बनप्साकेफूल६मासे फूलबघोलाजिसकोनी
लोफरकहतेहैं श्रौरकमोदनीकेफूलकहतेहैं६मासेका
हू६मासे श्रालूबुखारे१०दाने गुलाबकेफूलधेलेभरउ
नाव७दाने मुलेठी४मासेलिसोड़े१०दाने इनसबदवा
श्रोंकोजवकूटकरकेरातकोश्राधसेरजलमेंभिगोदेप्रात
कालउसकोश्रौटावेजवश्राधपावजलरहैतबउतारक
रश्रौरउसमेंगुलकंदसकरपाभरमिलाकरदिन३या४पीवै
इसकेबादजुलावलेवे सोश्रबजुलाबकीदवालिखतेहैं

॥श्रथदवाजुल्लाबकी॥

श्रमलतास६तोला सनाय३तोला बड़ीहड़कावक्कलधे
लेभरहड़छोटीधेलेभर हरीधेलेभरमुनक्का१५दानेश्रा
लूबुखारे१० दाने उन्नाव१दूस६माशे खतमी६मासेखुर्ब
जी६माशे चंदनसुपेद६मासे कासनी६मासे चंदनला
ल६मासे पितपापरा६मासे चिरायता६मासे गोरखमुंडी
६माशे लिसोड़ा१५दानेसोंफ४मासेसोंफकीजड़४मासे

उन्नाव ७ दाने · बनफसा ६ मासे · गाजबां ६ मासे · सीरखिस्त २ तोले अंजीरविलायती ४ दाने मकोय धेलेभर तुरंजबीन दो २ तोले रोगनबादाम ६ मासे अर्क मकोय ॥ सेर गुलाबजल एकसेर सक्कर लाल ९ छटांक इनदवाओंकी तीन पुड़ियाकरै औ आधसेर जलका आधपाव रहै तव छानकर पीवे औ इससे पीकर प्यास लगे तो अर्क मकोयका पीवे जल न पीवे इसके ऊपर पतली सी खिचड़ी दिमाधीके खाय फिर दूसरे दिन ठंढाई पीवे जिस्से गरमी जुलावकी सांत होय सो ठंढाई लिखते हैं ॥

अथ जुलावके ऊपर ठंढाई

विहीदाना ४ मासे रेसाखतमी ५ मासे ककड़ी खीराके बीज ५ मासे मिश्री २ तोले इन सब दवाई ओंकी ठंढाई बनाकर पीवे एक दिन तो जुलाव लेय और दूसरे दिन ठंढाई पीवे इसी तरह तीन दिन जुलाव लेय तो ये जुलाव इतने रोगोंको फायदा करता है सो लिखते हैं कोढ · भगंदर · सुजाक · बवासीर · पुरानाताप · बातरक्त · उदर गोला · नेत्रकेसारेरोग · गरमीकारोग · कृमीरोग · शरीरकी सूजन · पीरिया · अरुचि स्त्रीके जोनकेरोग · प्रमेह · कानकेतथा नेत्रके रोगोंको आदि लेके और बहुतसे रोग दूर होय इति महा जुलाव संपूर्णम्

अथ अरक भूख बढानेवाला ·

अदरकका रस तीन पाव प्यारपाढेकारस आधसेर पानका रस आधसेर लैंग ल्लोंग ९ तोला इलायचीवड़ी ३ तो ·

पीपल ।।) आनेभर दालचीनी ।।) भर कालीमिरच १) भर
जवाखार ।।) भर सज्जी ।।) भर चनाखार ।।) जीरासुपेद १) भर
जीरास्याह १) भर नोंनकाला ४।। मासे नोनखारी ४।। मासे
नोनसमुद्रका ४।। मासे नोनसंचर ४।। मासे येसबदा
कूटपीसकपहछानकरसबअर्कडुकठेकरकेउसमेंसब
दवाडालकरउसअर्ककोसीसेमेंअथवाचीनीकेबासन
मेंभरकरउसेघासमैंधरैसातदिनकेबादएकतोलारोज
खावैतौभूखबहुतलगेऔरपेटकाफूलऔरकूमीतथा
पेटकाअफरानायेदूरहोयऔरपस्परसरीकाभीभोजन
पचै ।। इतिवन्हिवर्द्धनार्कसम्पूर्णम्शुभम् ।।

अथसंखियाजारणविधिलि०

अमरवेललावैउसेहांडीमेंभरसोराडालचूल्हेपरचढानै
चेआचजलावैजबअमरवेलगलिजायतबदो २ ईंटप
जावेकीबडी २ लेदोनोंमेरुपासेजादागड्ढाखोदैफिरघि
सलेयकिजिस्मेंदोनोंईंटआपसमेंमिलिजावैफिरउस
हंडिआको कि जिस्मेंअमरवेलहैएककड़छीसेअमर
वेलगलीहुईलेयऔरदूसरेहांथमेंचिमचीसेशुद्धसं
खियाकीडली १ एकतोलेकीपकड़ेरहैफिरजलदीसेउ
सअमरवेलकोईंटमेंडालकरसंखियाकीडलीगाड़देय
औरदूसरीकड़छीभरकरउसकेऊपरडालकरजलदीसे
दूसरीईंटसेईंटकोजोड़करकपड़मिट्टीदेकरघाममेंसु
खावैफेरगजपुटकीआचमेंफूंकदेयतौनिर्धूमसंखिया

मरै औरतावेंको गलायउसमें एकरत्तीसंखियाकीभ·
स्मडालेतो तांबासुपेदहोय औरअनुपानसेखायतौ·
धमेरकीभूँखलगै औरदशस्त्रीभोगनेकीशक्तीहोय·
औरज्वरसेआदिलेसम्पूर्णरोगदूरहोय ॥ इति ॥

॥ इतिसंखियाजारणसम्पूर्ण

इतिश्रीनाड़ीप्रकाशग्रन्थ तथाऔषधा
नुभूतसंग्रह संपूर्णम् शुभमभवतु

हस्ताक्षर

पण्डितकेशवदेवशर्म्मास्थानश्रीमथुरा·
काशीसमानयंत्रालयमें
हस्बफ़रमायश लालादेवीदासताजरकु
तुबके लालहिरप्रसादकेप्रबंधसें
छपी
सन
१८८४ई०

इति

IGNCA RAR
ACC. No. R-319

इश्तहार

प्रगटहो कि इस नाड़ीप्रकाश ग्रंथका हक्क मुसन्नफी मेरा है इसवास्ते कोई साहब बिना इजाजत मेरे छापनेका इरादा न करै और कानूनका ख्याल रक्खै और मेरे पास सब जगेकी पुस्तकें स्थानी मुंबई · कलकत्ता · काशी · लखनऊ · कानपुर · आगरा · दिल्ली · मेरठ · की मौजूद रहती हैं जिन साहबोंको लेनी मंजूर हो नीचे लिखे ठिकाने के माफिक मंगालेवें फिहरिस्त उनकिताबोंकी जिस्में हक्क मुसन्नफी मेरा है.

	कीमत	डाकमहसूल
नाड़ीप्रकाशभाषाटीकासहित · · · · · · · ·	-)'	ऽ॥
अजीर्णमंजरीभाषाटीकासहित · · · · · · · ·	=)	ऽ॥
माधवनिदानभाषाटीकासहित · · · · · · · ·	२॥)	)
तिब्बप्रभाकर अर्थात् तिब्ब यूसफी भाषाटीकासहित	॥)	-)
रसराजसुंदरपहिलाखंड पूर्वभागभाषाटीकासहित ·	।=)	-)
हंसराजनिदानभाषाटीकासहित · · · · ·	॥=)	=)
संस्कृतप्रवेशिनीभाषाटीकासहित	-)॥	ऽ॥
हमीरहठख्यालकविकृतकवित्तदोहाशैरोंमें · ·	-)॥	ऽ॥
बल्लाबिल्लासमझूलनोंमें · · · · · · · ·	।=)	-)॥
जाहरपीरझूलनोंमें · · · · · · · ·	=)	-)
बेलाकागौनाझूलनोंमें · · · · · · · ·	-)	ऽ॥
योगचिंतामणिभाषाटीकासहितविलायतीकागज	२)	।)

श्रीमद्भागवतकादशमस्कंधभाषाटीकासहितछपरहा है.

देवीदास खत्री ताजरकुतब
नई सड़क दूकान नंबर ७६
शहर मथुरा.

KALANIDHI
Rare Book Collection
IGNCA
ACC No. R-319
Date: 25-3-08

END

Indira Gandhi National
Centre for the Arts